International Journal of Applied Research 2015; 1(9): 235-236

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(9): 104-107
www.allresearchjournal.com
Received: 21-06-2015
Accepted: 24-07-2015

डॉ शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हि प

Correspondence:
डॉ शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हि प

मलिक मुहम्मद जायसी का रहस्यवाद

डॉ शिवदत्त शर्मा

यह सत्य है कि मनुष्य प्रारम्भ से ही ज्ञात से अज्ञात की ओर उन्मुख रहा है।प्रकृति के अनेक रहस्य उसने खोले हैं तथा निरन्तर इस दिशा में प्रयत्नशील है। इस सृष्टि के रचयिता एवं नियन्ता के स्वरूप की गुत्थी को सुलझाने का प्रयत्न किया तब वह दर्शन बन गया किन्तु जब इसे जानने का प्रयास किया तथा अपने अनुभव को वाणी के द्वारा अभिव्यंजित किया तब इसे रहस्यवाद की संज्ञा दी गई । 1 रहस्यवाद को सुघड शब्दों में बांधने का प्रयास अनेक विद्वानों ने किया है जिनमें कुछ एक इस प्रकार है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रंहस्यवाद की व्याख्या करते हुए कहा है कि ज्ञान के क्षेत्र मे जिसे अद्वैतवाद कहते हैं भावना के क्षेत्र में वही रहस्यवाद कहलाता है।

डॉ सरनाम सिंह लिखते हैं कि– यह कहना समीचीन नहीं लगता कि जो ज्ञान के क्षेत्र में अद्वैतवाद कहलाता है वही भावना के क्षेत्र में रहस्यवाद कहलाता है क्योंकि भावना के अतिरिक्त रहस्यवाद का सम्बन्ध अभिव्यक्ति के एक विशेष रूप से भी है जिसमें शब्द का अपना अर्थऔर संकेत होता है।

महान कवि जयशंकर प्रसाद ने लिखा है– काव्य में आत्मा की संकल्पनात्मक मूल अनुभूति की मुख्य धारा रहस्यवाद है।

आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने काव्यवस्तु और काव्यविधान दोनों ही दृष्टियों से रहस्यवादी होना सम्भव मानते हुए लिखा है– रहस्यवाद शब्द काव्य की एक धारा विशेषे को सूचित करता है।यह प्रधानतः उसमें लक्षित होने वाली उस अभिव्यक्ति की ओर संकेत करता है जो विश्वात्मक सत्ता की प्रत्यक्ष गम्भीर एवं तीव्र अनुभूति के साथ सम्बन्ध रखती है। 2

डॉ रामकुमार वर्मा ने रहस्यवाद की व्याख्या करते हुए लिखा है–रहस्यवाद जीवात्मा की उस अन्तर्हित प्रवृत्ति का प्रकाशन है जिसमें वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शांत व निश्छल सम्बन्ध जोडना चाहती है। यह सम्बन्ध यहां तक बढ जाता है कि दोनों में कुछ भी अन्तर नहीं रहता।

ये सभी परिभाषाएं इस ओर संकेत करतीं हैं कि प्रकृति के कण कण में विद्यमान उस अज्ञात सत्ता की झलक पाना आत्मा को परमात्मा का अंश समझकर उससे मिलन की उत्कट इच्छा एवं अज्ञात सत्ता के रहस्योदघाटन सम्बन्धी भाव व्यक्त करना आदि साहित्य के क्षेत्र में रहस्यवादी काव्य कहलाता हैं। 3 परम तत्व की जिज्ञासा उसका रहस्य जानने उससे सम्बन्ध स्थापित करने अनुराग जताने और जानने के साथ एकात्म हो जाने की उत्कट इच्छा आदि ही रहस्यवाद के मूल आधार हैं। रहस्यवाद भारतीय दार्शनिक परम्परा में नया नहीं हैं। रहस्यवाद सर्वप्रथम वेदों की ऋचाओं और उपनिषदों में दिखाई देता है। 4 परम सत्ता के प्रति उस की जिज्ञासा स्वतः ही अनुभव की जा सकती है।

कस्मै देवाय हविषा विधेमः– जैसी ऋचाएं इसी तथ्य की ओर संकेत करतीं हैं।उपनिषदो में मुखर रूप से अद्वैतवाद के प्रतिपादन में रहस्यवादी परम्परा का विकाास देखा जा सकताहै।5 उपनिषदों में भावनात्मक माधुर्य के दर्शन नहीं होते। श्रीमद्भगवद्गीता के दशम अध्याय में भावात्मक सर्ववाद का निरूपण हुआ है जो रहस्यवाद का ही अंश है। 6

पौराणिक साहित्य में अवतार वाद के कारण भारत की अध्यात्म प्रवृत्ति रहस्यवाद के स्थान पर भक्ति की ओर उन्मुख हुई। 7 इसी कारण लौकिक संस्कृत–साहित्य तथा प्राकृत काव्य में रहस्यवाद की प्रवृत्ति बहुत कम प्रकट हुई। बौद्धधर्म जैसे अनीश्वरवादी मतवादों के प्रभाव से भी भारतीय अद्वैतदर्शन और रहस्यवादी प्रवृत्ति उभर न सकी। उसके बाद सिद्धों और योगियों की वाणी में रहस्य भावना के दर्शन होने लगे परन्तु इस रहस्ष्वादी प्रवृत्ति में भावना से प्रमुख साधना पक्ष रहा है। भक्ति काल के उपरान्त रहस्यवाद के दर्शन आधुनिक काल में छायावादी कवियों में होते हैं परन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि छायावादी काल की रहस्यवादी कविता पूर्व युगाों की रहस्यवादी काव्य

रचनाओं से भिन्न है क्योंकि आधुनिक रहस्यवाद में कल्पना का पुट अधिक है जबकि पूर्ववर्ती काव्य रचनाओं में रहस्यवाद साधनात्मक एवं अनुभूति परक है। इस तरह रहस्यवाद के अनेक रूप हमारे दृष्टिगोचर होते हैं।

पद्मावत में रहस्यवाद–

मलिकमुहम्मद जायसी अत्यन्त प्रतिभा शाली कवि हैंउनके काव्य में भावनात्मक साधनात्मक तथा अभिव्यक्ति मूलक रहस्यवाद के दर्शन होते हैं। जिस रहस्यवाद में ज्ञान तथा योग की क्रियाओं का वर्णन होता है उसे साधनात्मक रहस्यवाद कहते हैं। भावात्मक रहस्यवाद का सीधा सम्बन्ध प्रेमभावना तथा उपासना से हे। जहां तक अभिव्यक्ति मूलक रहस्यवाद का सम्बन्ध है इसमें अभिव्यक्ति का चमत्कार प्रधान रहता है तथा रहस्यवादी भावना गौण होती है। जायसी के रहस्यवाद पर सूफी मत का प्रभाव स्पष्ट है परन्तु इसके साथसाथ इन पर भावनात्मक रहस्यवाद का प्रभाव भी अवश्य पडा इसमें दो मत नही।

भावनात्मक रहस्यवाद–

जायसी के काव्य में तीनों प्रकार के रहस्यवाद के दर्शन होते हैं फिर भी उनके काव्य में भावनात्मक रहस्यवाद को अधिक महत्व दिया गया है।सूफी प्रतीकों के माध्यम से अपनी प्रेमभावना अभिव्यक्त करते थे यहां तक कि प्रेमी प्रेमिका को प्रतीक मानकर सगुण आधार का निर्माण कर लेते हैं।प्रतीक के कारण ही उनके निर्गुणवादी सिद्धान्त का निर्वाह हो जाता हैऔर प्रेम निरूपण भी। यही कारण है कि जायसी के रहस्यवाद में कबीर के प्रेम की नीरसता नहीं है। 8 यद्यपि जायसी ने लौकिक प्रेम कहानी का वर्णन किया है परन्तु उन्होंने लौकिक प्रेमकथा द्वारा आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यंजना की है। पद्मावत में अनेक स्थलोंपर आध्यात्मिक प्रेम का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। पद्मावती में ब्रह्म के संकेत भी पद्मावत में मिलते हैं। एक उदाहरण देखिए–

कहा मानसर चाह सो पाई । पारस रूप इहां लागि आई ।।
भा निरमल तेन्ह पायन परसे । पावा रूप रूप के दरसे ।।

आध्या त्मिक प्रेम के स्फुटित होते ही साधक रत्नसेन संसार को छोडकर अलौकिक प्रे मिका को प्राप्त करने के लिए निकल पडता है। डॉ मनमोहन गौतम के अनुसार पदमावत का रहस्यवाद शुद्ध भावनात्मक रहस्यवाद है

अन्त में जब रत्नसेन युद्ध में लडते लडते वीर गति को प्राप्त हो जाता है तब दोनों रानियां उसके साथ सती हो जाती हैं। इस अवसर पर कवि लिखता भी है–

राती पिउ के नेह गई सरग भएउ रतनार।
जो रे उवा सो अथवा रहा न कोई संसार।।

इस प्रकार कवि के अनुसार साधक और साध्य का असली मिलन परलोक में होता है। पदमावत की प्रेम–कथा सूफी प्रेम भावना को अभिव्यक्त करने के लिए लिखी गई है।यही आध्यात्मिक प्रेम पदमावत का प्रतिपाद्य हैजिसे गूढ एवं रहस्यमय कहा जाता है।पदमावत प्रेमरस से परिपूर्ण काव्य है। यह दूर चलने वाले के लिए निकट और निकट वाले के लिए दूर है। 9

मानस प्रेम भएउ बैकुंठी नाहिं न काह छार इक मुंठी।
प्रेम पंथ जो पहुंचे पारा । बहुरि न आइ मिलैं एहि छारा।।

जायसी यद्यपि सिद्धों नाथों से प्रभावित नहीं थे फिर भी कवि ने हठ योगियों की इडा पिंगला सुषुम्ना आदि की चर्चा की है वह साधनात्मक रहस्यवाद का सशक्त उदाहरण है। 10 पार्वती महेश खण्ड में महादेव द्वारा सिंहल गढ का जो वर्णन किया है वह भी साधनात्मक रहस्यवाद की ओर ही संकेत करता है–

नौ पौरी तेहि गढ मझियारा औ तहं फिरहिं पांच कोटवारा।
दसवां दुआर गुपुत एक तारा अगम चढाव बर सुठि बांका।।

यहां आंख कान नाक आदि नौ द्वारों के प्रतीक हैंतथा दसवां द्वार ब्रह्मरंध्र हे। पांच कोतवाल काम क्रोध लोभ आदि पांच विकारों के प्रतीक हैंजिनके फलस्वरूप सुषुम्ना नाडी दशम द्वार तक नहीं पहुंच पाती। दशम द्वार जिसे ब्रह्मरंध्र भी कहा जाता है ताड के वृक्ष के समान बहुत उंचा माना गया है केवल अन्तर्मुखी ही उसे देख पाता है।

दसवें दुआर तासु का लेखा उलठी दिस्टि जो लाव सो देखा। 11
जाइ सो जाइस पास मन बंदी जस धंसि लीन्ह कान्ह कालिंदी।
हूं मन नाथु मारि के स्वांसा जो पै नरहि आपहुं करना सा ।
परगट लोकचार कहुत बाता गुपुत लाउ चासौं मन राता।

जायसी ने अपनी अलौकिक प्रतिभा से इस साधनात्मक रहस्यवाद में सूफियों की चार दशाओं शरीयत तरीकत हकीकत तथा मारिफत को भी शरीक किया है। साधनात्मक रहस्यवाद में उनकी कोई रुचि नही थी जायसी केवल भावनात्मक रहस्यवाद के ही पक्षधर थे।

अभिव्यक्ति मूलक रहस्यवाद–

जायसी काव्य में चमस्कार के पक्ष में नही थे फिर भी कुछ स्थलों पर अभिव्यक्तिमूलक रहस्यवाद की अभिव्यंजना की है।कवि ने साधना द्वारा भाव को प्रकट करने के लिए कुछ इस प्रकार के प्रतीकों की योजना की है जो चमत्कारिक अर्थ की ओर आकर्षित करते हैं।रत्नसेन पदमावती खण्ड में कवि ने अभिव्यक्ति मूलक रहस्यवादी शब्दावली का प्रयोग किया हैं नाड पेड मद आदि शब्द ध्यान देने योग्य हैं। यह तो स्पष्ट है कि जायसी का रहस्यवाद मुख्यतः भावनात्मक रहस्यवाद है।कवि का लौकिक प्रेम के द्वारा आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यंजना करना लक्ष्य है।इसदिशा में उन्हें र्प्याप्त सफलता भी मिली है इस में संदेह नहीं। डॉ द्वारिका प्रसादके अनुसार जायसी के रहस्यवाद में रहस्यात्मक अनुभूति का प्राधान्यहै और अनुभूति की अभिव्यक्ति में भावुकता का प्राधान्य है। यही कारण है कि जायसी के काव्य में रहस्यवाद का सरस एवं रोचक वर्णन मिलता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत भी इसी प्रकार का है उनका कथन है कि हिन्दी के कवियों में यदि कहीं रमणीय और सुन्दर अद्वितीय रहस्यवाद है तो जायसी में ही है।

संदर्भ सूचि–

1 जायसी ग्रन्थावली – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ 112
2 उत्तर भारत की संत परंपरा–आचार्य परशुराम चतुर्वेदी पृ 92
3 जायसी ग्रन्थावली – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ 137
4 उपरोक्त – पृ 117 ; 118
5 उपरि वत्
6 श्रीमद् भगवद्गीता – अध्याय 10
7 जायसी ग्रंथावली – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ 119
8 उपरोक्त – पृ 122
9 उपरोक्त – पृ 125 126
10 उपरोंक्त – पृ 118 120
11 उपरोक्त – पृ 120